मानिक पहाड़ के हिंडोले

पहाड़ मानिक मोहोल कई, यों पहाड़ मोहोल अनेक।
सब अपार अलेखे इन जिमी, कहां लो कहूं विवेक।। १ ।।

मानिक पहाड़ में पहाड़ों जैसे बड़े ऊंचे महल हैं जो बेशुमार हैं। इन सबका वर्णन कहां तक कैसे करूं?

बड़े पहाड़ जो हिंडोले, बारे हजार बैठत।
एकै छप्पर खटके, हक हादी साथ हींचत।। २ ।।

इस बड़े पहाड़ में बड़े हिंडोले लगे हैं जिसमें एक हिंडोले में बारह हजार सखियां बैठती हैं। साथ में श्री राजश्यामाजी खट छप्पर के हिंडोले में झूलते हैं।

अनेक पहाड़ कई हिंडोले, जुदी जुदी कई जुगत।
जो सुख हिंडोले पहाड़ के, जुबां कर ना सके सिफत।। ३ ।।

इस मानिक पहाड़ के अन्दर बड़ी-बड़ी हवेलियां पहाड़ों जैसी हैं और कई तरह की बनी हैं। इस पहाड़ के हिंडोलों के सुख जबान से वर्णन नहीं किए जाते।

कई हिंडोले पहाड़ में, ऊपर से ढांपेल।
सुख लेवें कई विध के, रूहें करें कई खेल।। ४ ।।

पहाड़ के कई हिंडोले ऊपर से ढके हैं। जहां पर रूहें कई तरह के खेल करके कई तरह के सुख लेती हैं।

कई सुख लें मीठे पहाड़ के, कई विध हींचें हिंडोले।
कई सुख हिंडोले बाहेर, बीच पहाड़ के खुले।। ५ ।।

इस मानिक पहाड़ के हिंडोलों को चलाने के भी कई सुख हैं। कई हिंडोले बाहर हैं, कई अन्दर हैं, कई पहाड़ के बीच खुले हैं।

एक जरा इन जिमी का, जोत न माए आसमान।
जोत जवेरों पहाड़ों की, इत कहा कहे जुबान।।। ६ ।।

यहां की जमीन के एक कण का तेज आकाश में नहीं समाता, तो फिर यहां के जवाहरात के पहाड़ों की शोभा किस जबान से वर्णन करूं?

कोई पहाड़ गिरदवाए का, कोई बराबर खूंटों चार।
जो सोभा पहाड़न की, सो न आवे माहें सुमार।। ७ ।।

कोई पहाड़ गोल है और कोई चौरस है। इन पहाड़ों की शोभा शुमार में नहीं है।

जिमी गिरदवाए पहाड़ों की, सब देखत बराबर।
पहाड़ भी सीधे सब तरफों, जानों हकें किए दिल धर।। ८ ।।

चारों तरफ देखने से जमीन पहाड़ों की ही दिखाई देती है जो सभी बराबर है। पहाड़ भी सब तरफ से सीधे हैं। लगता है श्री राजश्यामाजी ने स्वयं इनको अपनी चाहना से बनाया हो।

Nijanand App

कई मोहोल पहाड़ों मिने, कई मोहोल पहाड़ों ऊपर।
जो बन पहाड़ या जिमिएं, सो इन जुबां कहूं क्यों कर।। ९ ।।

कई महल पहाड़ों के अन्दर बने हैं। कई महल पहाड़ों के ऊपर बने हैं। यहां के वन, पहाड़ या जमीन की सिफत झूठी जबान से कैसे वर्णन करूं?

ना सुख कहे जाएं जिमी के, ना सुख कहे जाएं बन।
ना सुख कहे जाएं मोहोलों के, न सुख कहे जाएं पहाड़न।। १० ।।

जमीन के, वन के, महलों के तथा पहाड़ों के सुख कहने में नहीं आते।

कई पहाड़ झिरने झिरें, कई ऊपर नेहेरें चली जाएं।
कई उतरें ऊपर से चादरें, कई तालों बीच आए समाए।। ११ ।।

कई पहाड़ों से झरने झरते हैं। कई नहरें ऊपर जाती हैं। कई जगह से पानी पहाड़ से चादरों के रूप में तालों में आकर समा जाता है।

नेहेरें बन में होए चलीं, सो नेहेरें कई मिलत।
आगूं आए मोहोल बन के, इत चली कई जुगत।। १२ ।।

कई नहरें वन से होकर एक-दूसरे से मिलती हुई चलती हैं। इसके आगे वन की मोहोलातें आती हैं जिनकी सिफत कई तरह की है।

ए सुख हमारे कहां गए, ए जो खेल होत दिन रात।
हक के साथ हम सब रूहें, हंस हंस करती बात।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज के साथ हम सब रूहें रात-दिन यहां हंसती-खेलती, बातें करती थीं। यह हमारे सुख कहां चले गए?

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। ११५४ ।।

बन के मोहोल नेहेरें

बन छाया है मोहोल जो, इत मोहोल बने बन के।
जानो सोभा सबसे अतंत है, सब सुख लेती रूहें ए।। १ ।।

मानिक पहाड़ से आगे वन की नहरें हैं जिनमें सुन्दर महल बने हैं और उन महलों पर वन की छाया है। लगता है यह शोभा सबसे अच्छी है जहां रूहें सब तरह का सुख लेती हैं।

नेहेरें सागर से खुली चलीं, सो भी भई बन माहें।
ए बन सोभा नेहेरों की, खूबी क्यों केहेसी जुबांएं।। २ ।।

सागर से नहरें खुली चलती हैं और वन के बीच में आती हैं। यहां पर इनकी शोभा अधिक बढ़ जाती है। इस खूबी का बयान यहां की जबान कैसे करे?

सागर किनारे जो बन, ए बन नेहेरें विवेक।
मोहोल बन जो देखिए, जानों सोई नेक से नेक।। ३ ।।

सागरों के किनारे के वन तथा उनके अन्दर की नहरें तथा महल जो वनों के ही हैं, देखने से एक से एक अच्छे लगते हैं।

Nijanand App